



# बहुत कठिन है डगट संसद की

## दैनिक समाज जागरण

पांच राज्य विधानसभाओं के चुनाव परिणामों ने नए साल में विपक्ष के लिए संसद की डगर को बहुत कठिन बना दिया है।

'अबॉन नवसलियो' के प्रचंड विरोध के बावजूद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जातू चल गया और खानदानी जादूगर हार गए। हालांकि चुनावों के सभी नतीजे अप्रत्याशित और अविश्वसनीय हैं, लेकिन उन्हें खारिज नहीं किया जा सकता।

जनादेश तो होता ही शिरोधार्य करने के लिए है। देश की प्रमुख विपक्षी पार्टी कांग्रेस के लिए जहा ये नतीजे आत्मपरीक्षण के लिए हैं।

पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों के नतीजे आने के बाद भाजपा के लिए संसद का रास्ता जितना आसान हो सकता है कांग्रेस और शेष विपक्ष के लिए उतना ही कठिन।

व्यापकी भाजपा के लिए एक बड़ा अवसर हैं वहीं लोकसभा चुनाव के लिए बनाये गए आईएनडीआई [इंडिया] गठबंधन के लिए एक अग्निपीक्षा।

इस समय देश विचारधाराओं के बजाय ऐसे मुद्दों पर विभाजित होता दिखाई दे रहा है जो नए नहीं हैं। नया सिर्फ इतना है कि देश, आजादी से पहले जहाँ खड़ा था, आज भी वहीं खड़ा नजर आ रहा है।

फर्क सिर्फ इतना है कि आजादी के पहले राजनीति 'प्रोडक्ट' नहीं थी और उसके साथ किसी तरह की कोई गारंटी बाबस्ता नहीं थी। जो

कुछ था वो एक संघर्ष से हासिल आजादी और एक संविधान था। मुझे हैरानी होती है कि जो राजनीति आजादी की लड़ाई के फैसल बाद देश में और्धे मुंह गिरी थी वहीं

राजनीति आजादी के 75 साल बाद शीर्ष पर है। और इसकी बजह शायद विचारशून्यता ही हो सकती है।

मैंने कल ही कहा था कि अब त्रैता नहीं कलियुग है। अब हानि, लाभ, जीवन, मरण, जरूर, अपजस सब 'विधि' के नहीं

'नृप' के हाथ में हैं, और वे आम चुनाव से पहले हुए सेमीफाइनल में साबित भी हो गया। अब जनता विधि के बजाय नृप पर ज्यादा भरोसा कर रही है। राजा की गारंटियां अपना असर दिखा रही हैं। कोई इसे स्वीकार करे या न करे, इसके गारंटियों और नवी राजनीति पर कोई फर्क नहीं पड़ता। फर्क पड़ता है तो देश के उस मूल चरित्र पर पड़ता है जिसके लिए देश, दुनिया में जाना -पहचाना जाता रहा है।

चुनावों में कौन, किस बजह से हारा, किस बजह से जीता इसका विशेषण राजनीतिक दल करें, ये काम हमारा नहीं है। क्योंकि राजनीति में हमारा कोई दखल नहीं है। यदि कोई माना है कि नेता राहुल गांधी ने पिछले कुछ वर्षों में कांग्रेस को अनश्वक की है।

नीति निपुण लोगों को निंदा और प्रशंसा दोनों ही दिक्कतीर्ण लगते हैं, वह सदा शान्ति और धैर्य रखते हैं, वे विचलित नहीं न्यायपथ से होते हैं।

सराहना व निंदा दोनों अच्छे होते हैं, क्योंकि सराहना हमें प्रेरणा देती है, और निन्दा हमें सावधान करती है, सतकता व सुरक्षा तभी मिलती है।

कर्म धन, धर्म धन और विचार धन, शरीर के साथ संसार में छूट जाते हैं, आत्मा अनित्य, शरीर नश्वर होता है, आत्मा के साथ कुछ भी नहीं जाता है।

प्रदेश है। ये प्रदेश इतना बड़ा है जितने हमारे सूबे के अनेक शहर हैं। हिमाचल की सत्ता में रहकर कांग्रेस की पुरानी पीढ़ी का सत्तालोत्पुत्र और सामंती लिए तकत नहीं बटोर सकती है। कांग्रेस में अब कोई कामराज योजना की कल्पना नहीं कर सकत। तमाम बड़े राज्यों के लिए दक्षिण की चार मीनार के दो दरवाजे बेश-एक खुल गए हैं लेकिन इनसे मिलने वाली ऊर्जा भी शेष भारत में कांग्रेस के मुरझाये वे उप्रदराज हो चुकी हैं पौधे को संजीवनी नहीं दे सकते।

पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों के नतीजे आने के बाद भाजपा के लिए संसद का रास्ता जितना आसान हो सकता है कांग्रेस और शेष विपक्ष के लिए उतना ही कठिन। कांग्रेस के स्वीकार करने के लिए शायद तैयार नहीं है कि वो अब देश की सबसे प्रमुख विपक्षी पार्टी है। कांग्रेस जिस संघर्ष के रस्ते से देश-वासियों के दिल में उत्तरी थी, वो संघर्ष करने का माद्दा कांग्रेस के पास नहीं है।

क्या आप नहीं मानते कि आज देश में भाजपा को छोड़ जितने भी राजनीतिक दल है उनमें से अधिकांश कांग्रेस के गर्भ से उसके दम्भ की वजह से नहीं जाते? देश में जितने भी राजनीतिक दल हैं उनमें से

कांग्रेस के लिए एक बात और कांग्रेस के लिए एक बात और भाजपा को छोड़ जितने रखना आसान नहीं रहा।

कांग्रेस विद्युत तेलंगाना के बजाय मध्य प्रदेश या राजस्थान जीती तो सुमिकिन है कि परिहरण कुछ और कांग्रेस की जारी राजनीतिक दल है उनमें से

उत्तरी राजनीतिक दल है उनमें से अधिकांश कांग्रेस के गर्भ से उसके दम्भ की वजह से नहीं जाते? देश में जितने भी समाजवादी राजनीतिक दल हैं उनके डीएनए में भी कहीं न कहीं, थोड़ी-बहुत कांग्रेस है।

यहाँ तक की बहुजन समाजवादी पार्टी भी कांग्रेस का विपक्ष है। इसके लिए एक बात और भाजपा को छोड़ जितने भी राजनीतिक दल है उनमें से

उत्तरी राजनीतिक दल है उनमें से अधिकांश कांग्रेस के गर्भ से उसके दम्भ की वजह से नहीं जाते? देश में जितने भी समाजवादी राजनीतिक दल हैं उनके डीएनए में भी कहीं न कहीं, अब राजस्थान और

छत्तीसगढ़ भी उसके हाथ से निकल गया। इसके लिए आजादी के लिए एक बात और कांग्रेस के लिए एक बात और भाजपा को छोड़ जितने भी राजनीतिक दल है उनमें से

उत्तरी राजनीतिक दल है उनमें से अधिकांश कांग्रेस के गर्भ से उसके दम्भ की वजह से नहीं जाते? देश में जितने भी समाजवादी राजनीतिक दल हैं उनके डीएनए में भी कहीं न कहीं, अब राजस्थान और

छत्तीसगढ़ भी उसके हाथ से निकल गया। इसके लिए एक बात और भाजपा को छोड़ जितने भी राजनीतिक दल है उनमें से

उत्तरी राजनीतिक दल है उनमें से अधिकांश कांग्रेस के गर्भ से उसके दम्भ की वजह से नहीं जाते? देश में जितने भी समाजवादी राजनीतिक दल हैं उनके डीएनए में भी कहीं न कहीं, अब राजस्थान और

छत्तीसगढ़ भी उसके हाथ से निकल गया। इसके लिए एक बात और भाजपा को छोड़ जितने भी राजनीतिक दल है उनमें से

उत्तरी राजनीतिक दल है उनमें से अधिकांश कांग्रेस के गर्भ से उसके दम्भ की वजह से नहीं जाते? देश में जितने भी समाजवादी राजनीतिक दल हैं उनके डीएनए में भी कहीं न कहीं, अब राजस्थान और

छत्तीसगढ़ भी उसके हाथ से निकल गया। इसके लिए एक बात और भाजपा को छोड़ जितने भी राजनीतिक दल है उनमें से

उत्तरी राजनीतिक दल है उनमें से अधिकांश कांग्रेस के गर्भ से उसके दम्भ की वजह से नहीं जाते? देश में जितने भी समाजवादी राजनीतिक दल हैं उनके डीएनए में भी कहीं न कहीं, अब राजस्थान और

छत्तीसगढ़ भी उसके हाथ से निकल गया। इसके लिए एक बात और भाजपा को छोड़ जितने भी राजनीतिक दल है उनमें से

उत्तरी राजनीतिक दल है उनमें से अधिकांश कांग्रेस के गर्भ से उसके दम्भ की वजह से नहीं जाते? देश में जितने भी समाजवादी राजनीतिक दल हैं उनके डीएनए में भी कहीं न कहीं, अब राजस्थान और

छत्तीसगढ़ भी उसके हाथ से निकल गया। इसके लिए एक बात और भाजपा को छोड़ जितने भी राजनीतिक दल है उनमें से

# भाजपा की हस्ते जीतके संकेत सर्वांग

## दैनिक समाज जागरण

पांच राज्य विधान सभाओं में जितने हमारे सूबे के अनेक शहर हैं। हिमाचल की सत्ता में रहकर कांग्रेस की पुरानी पीढ़ी का सत्तालोत्पुत्र और सामंती होता है। कांग्रेस में अब कोई कामराज योजना की कल्पना नहीं कर सकत।

कांग्रेस के लिए दक्षिण की चार मीनार के दो दरवाजे बेश-एक खुल गए हैं लेकिन इनसे मिलने वाली ऊर्जा भी शेष भारत में कांग्रेस के मुरझाये वे उप्रदराज हो चुकी हैं पौधे को संजीवनी नहीं दे सकते।

कांग्रेस ये स्वीकार करने के लिए शायद तैयार नहीं है। कांग्रेस के पास नहीं है जो आज भी राज्यों के लिए एक बात और कांग्रेस के लिए एक बात और भाजपा को छोड़ जितने भी राजनीतिक दल है उनमें से

उत्तरी राज्यों में कांग्रेस की जारी राज्यों में अब कोई कामराज योजना नहीं है। इन चुनाव में सावित कर दिया कि मोदी मैजिक कम नहीं है आ अपने विरोधीयों के सपनों को बहुमत से कुछ भी नहीं आया। जिनका चुनाव में विरोध बहुमत मिलने से सिद्ध हो गया कि जनता पर किंसको विचारात्मक कम नहीं है।

लोकसभा चुनाव में ठीक ठीक तीके जारी राज्यों में जितने भी अब कोई कामराज योजना की जारी राज्यों में अब कोई कामराज योजना नहीं आया। यहाँ भाजपा के लिए एक बात और कांग्र













## विकसित भारत संकल्प यात्रा 2047 तक प्रधानमंत्री की विकसित भारत बनाने की एक पहल है - अनिल द्यजनारा

प्रधानमंत्री ने सभको साथ लेकर चलने के लिए ही सभका साथ सभका विकास सभका विश्वास और सभका प्रयास का नारा दिया - श्रम एवं सेवायोजन जंगी।

विभागीय योजनाओं का लाभ घूटे लाभार्थीयों तक पहुंचायें-एस. राजलिंगम

सभी खण्ड विकास अधिकारी पात्र अवशेष लाभार्थीयों को आन लाइन रजिस्टर करायें और शत प्रतिशत संवृत्त करायें - हिमांशु नागपाल

## समाज जागरण

वाराणसी मंडल ब्लूरो

विकसित भारत संकल्प यात्रा के अन्तर्गत सेवापुरी विकास खण्ड के ग्राम लखनसेनपुर में कैम्प अयोजित हुआ जिसका शुभार्थ मंत्री अनिल राजभर द्वारा दीप प्रज्ञलित कर तथा सरस्वती चिरप्र प्रायास करना चाहिए।

श्रम मंत्री ने कैम्प में विभिन्न विभागों

को दी गयी। कैम्प में कक्षा एक के बालक आनंद कुमार मंत्री के द्वारा उत्तर प्रदेश के 75 जिलों के नाम बिना रुके फरारें से सुनाया गया। कैम्प अप्रैल मंत्री ने 500 रुपए का इनाम दिया गया, इसके लाभार्थीयों को तथा पांच विभिन्न प्रधानमंत्री ने बनायी उसके लिए पैसा भेजा उसका लाभ वास्तव में लाभार्थीयों तक पहुंचे यह हम सभका प्रयास है और यही संकल्प है। भारत के मंत्रियों में हम सभको भागीदार बनाना है।

कैम्प एवं सेवायोजन मंत्री अनिल राजभर ने इस मैके पर ग्रामीणों को संवेदित करते हुए कहा कि हमारे लोकप्रिय प्रधानमंत्री का सपना है कि वर्ष 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाना है, विकसित भारत संकल्प यात्रा को उकी प्रेरणा से इसी लक्ष्य को हासिल करने की ओर एक कदम है वहांते हुए कहा कि जब तक गरीब आगे नहीं बढ़ेगा तब तक देश कैसे आगे बढ़ेगा। सभके सर पर पक्की छत, किसानों को आय लगानी हो, महिलाओं समान सहित अपने पैर पर खड़ी हों, कोई नौजान बोरोजार न रहे, सभी सम्पन्न हों तथा विकास अपके गांव में आये हैं, सरकार के मंत्री व अन्य लोग आये हैं, इसलिए कि अपको प्रधानमंत्री के प्रयास और प्रेरणा से अप तक योजनाओं का लाभ पहुंचाया जा सके। यिले नौ सालों में प्रधानमंत्री ने तस्वीर बदल

## स्टर सुंदरलाल अस्पताल के एमएस की नई कटूत

विवि के फैंस्टर पीडित पूर्व शिक्षक दिव्यांग बुर्जुर्ग की लोगों के सामने दी गालियाँ

## समाज जागरण

वाराणसी मंडल ब्लूरो

में धर्मदेव राम निवासी बिरादेपुर वाराणसी उम्र 74 वर्ष काशी हिंदू विश्वविद्यालय में स्कूल शिक्षक पद से सेवानिवृत्ति हुआ है। मैं शारीरिक रूप से दिव्यांग हूं तथा वर्तमान में मेरा प्रोट्रोटेट कैंसर का काशी हिंदू विश्वविद्यालय में इलाज भी चल रहा है। आज 4 दिसंबर, 2023 को मैं रेडियो श्रैपो विभाग में डॉक्टर को दिखाने गया था। इसी समय इंटीर्नट्यूर ऑफ मेडिकल साइंस के डॉक्टर को दिखाया गया है। आज उनसे योग्यता की जानकारी दी गई। शिशा विभाग द्वारा बताया गया कि 75 % स्कूल निपुण हो गये हैं दिसंबर तक 100 % हो जायेंगे। सेवापुरी कायाक्रम में उत्तर प्रदेश में प्रथम है। समाज कल्याण योग्य स्टाल पर पेशन, परिवारिक लाभ, कन्या सुपर्गाला, पेंशन से आधार लिंक का कार्य किया गया। उज्जवला के फार्म लाभार्थीयों से प्राप्त किये गये तथा सलाहूं विभाग द्वारा राशन कार्ड में बूनद जोड़े हुए अवेदन लिये गये।

**11 पशु कूट्या अधिक से संबंधित एक गांधियुक्त को किया गिरफ्तार।**

## समाज जागरण

वाराणसी मंडल ब्लूरो

क्षेत्राधिकारी मछलीशहर जैनपुर के पर्यवेक्षण में प्रधारी निरीक्षक दीपन्द्र सिंह के द्वारा मध्यम हराव द्वारा मीरांग थाना क्षेत्र के अन्तर्गत जंबूदंग तिराहा से वार्तित अभियुक्त सूजू कुमार पटेल पुरु चन्द्रमा पटेल निं 0 ग्राम भरतपुर थाना बड़ागांव जैनपद वाराणसी को जांघड तिराहा से गिरफ्तार कर रखा था। जैन वाले के सम्बन्ध प्रेषित किया जा रहा है। पुलिस पृष्ठाताल में युवक ने अपना नाम सूजू पटेल पुरु चन्द्रमा पटेल निवासी भरतपुर बड़ागांव बताया गिरफ्तार करने के लिए बढ़ाई दी और

सीट खाली न होने के कारण वे रसेन में खड़ा था। जब वह मेरे सामने से चले गए। उनके चले जाने के बाद उनके साथ चल रहे थे मेडिकल सुपरिंटेंट और फोक्सर के कोंप्रेसर को गुप्ता मेरे पास आए और मेरे साथ दुर्घटना करने पर चढ़ाई दी गयी। उनको इस नवीन पद के लिए विभाग

प्रधानमंत्री ने देखा कि उनकी गतिशीलता अत्यधिक है। ये लोग खुश सनातनी नहीं हो सकते।

व्यायामी को लोग नींवेज नहीं खाता? अखिलेश यादव जानवारी के मामले पर सबल पूछे रहे जबकि उनसे एक जांघड है। ये लोग खुश सनातनी नहीं हो सकते।

व्यायामी को लोग नींवेज नहीं खाता? अखिलेश यादव जानवारी के मामले पर सबल पूछे रहे जबकि उनसे एक जांघड है। ये लोग खुश सनातनी नहीं हो सकते।

व्यायामी को लोग नींवेज नहीं खाता? अखिलेश यादव जानवारी के मामले पर सबल पूछे रहे जबकि उनसे एक जांघड है। ये लोग खुश सनातनी नहीं हो सकते।

व्यायामी को लोग नींवेज नहीं खाता? अखिलेश यादव जानवारी के मामले पर सबल पूछे रहे जबकि उनसे एक जांघड है। ये लोग खुश सनातनी नहीं हो सकते।

व्यायामी को लोग नींवेज नहीं खाता? अखिलेश यादव जानवारी के मामले पर सबल पूछे रहे जबकि उनसे एक जांघड है। ये लोग खुश सनातनी नहीं हो सकते।

व्यायामी को लोग नींवेज नहीं खाता? अखिलेश यादव जानवारी के मामले पर सबल पूछे रहे जबकि उनसे एक जांघड है। ये लोग खुश सनातनी नहीं हो सकते।

व्यायामी को लोग नींवेज नहीं खाता? अखिलेश यादव जानवारी के मामले पर सबल पूछे रहे जबकि उनसे एक जांघड है। ये लोग खुश सनातनी नहीं हो सकते।

व्यायामी को लोग नींवेज नहीं खाता? अखिलेश यादव जानवारी के मामले पर सबल पूछे रहे जबकि उनसे एक जांघड है। ये लोग खुश सनातनी नहीं हो सकते।

व्यायामी को लोग नींवेज नहीं खाता? अखिलेश यादव जानवारी के मामले पर सबल पूछे रहे जबकि उनसे एक जांघड है। ये लोग खुश सनातनी नहीं हो सकते।

व्यायामी को लोग नींवेज नहीं खाता? अखिलेश यादव जानवारी के मामले पर सबल पूछे रहे जबकि उनसे एक जांघड है। ये लोग खुश सनातनी नहीं हो सकते।

व्यायामी को लोग नींवेज नहीं खाता? अखिलेश यादव जानवारी के मामले पर सबल पूछे रहे जबकि उनसे एक जांघड है। ये लोग खुश सनातनी नहीं हो सकते।

व्यायामी को लोग नींवेज नहीं खाता? अखिलेश यादव जानवारी के मामले पर सबल पूछे रहे जबकि उनसे एक जांघड है। ये लोग खुश सनातनी नहीं हो सकते।

व्यायामी को लोग नींवेज नहीं खाता? अखिलेश यादव जानवारी के मामले पर सबल पूछे रहे जबकि उनसे एक जांघड है। ये लोग खुश सनातनी नहीं हो सकते।

व्यायामी को लोग नींवेज नहीं खाता? अखिलेश यादव जानवारी के मामले पर सबल पूछे रहे जबकि उनसे एक जांघड है। ये लोग खुश सनातनी नहीं हो सकते।

व्यायामी को लोग नींवेज नहीं खाता? अखिलेश यादव जानवारी के मामले पर सबल पूछे रहे जबकि उनसे एक जांघड है। ये लोग खुश सनातनी नहीं हो सकते।

व्यायामी को लोग नींवेज नहीं खाता? अखिलेश यादव जानवारी के मामले पर सबल पूछे रहे जबकि उनसे एक जांघड है। ये लोग खुश सनातनी नहीं हो सकते।

व्यायामी को लोग नींवेज नहीं खाता? अखिलेश यादव जानवारी के मामले पर सबल पूछे रहे जबकि उनसे एक जांघड है। ये लोग खुश सनातनी नहीं हो सकते।

व्यायामी को लोग नींवेज नहीं खाता? अखिलेश यादव जानवारी के मामले पर सबल पूछे रहे जबकि उनसे एक जांघड है। ये लोग खुश सनातनी नहीं हो सकते।

व्यायामी को लोग नींवेज नहीं खाता? अखिलेश यादव जानवारी के मामले पर सबल पूछे रहे जबकि उनसे एक जांघड है। ये लोग खुश सनातनी नहीं हो सकते।

व्यायामी को लोग नींवेज नहीं खाता? अखिलेश यादव जानवारी के मामले पर सबल पूछे रहे जबकि उनसे एक जांघड है। ये लोग खुश सनातनी नहीं हो सकते।

व्यायामी को लोग नींवेज नहीं खाता? अखिलेश यादव जानवारी के मामले पर सबल पूछे रहे जबकि उनसे एक जांघड है। ये लोग खुश सनातनी नहीं हो सकते।

व्यायामी को लोग नींवेज नहीं खाता? अखिलेश यादव जानवारी के मामले पर सबल पूछे रहे जबकि उनसे एक जांघड है। ये लोग खुश सनातनी नहीं हो सकते।

व्यायामी को लोग नींवेज नहीं खाता? अखिलेश यादव जानवारी के मामले पर सबल पूछे रहे जबकि उनसे एक जांघड है। ये लोग





